शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

## संपादकीय

# आने वाला युग मुख्यत: स्त्रियों का है

विनोबा

*(विनोबा जी ने आगामी युग के लिए महाराष्ट्र के वर्धा जिले के पवनार गांव में ब्रह्मविद्यामंदिर की स्थापना की। यहां ब्रह्मविद्या की सामूहिक साधना चलती है। मुख्यतया बहनें ही यहां रहती हैंकुछ भाई भी हैं। और यहां सब काम हाथों से होता है। थोड़ी देर खेती करते हैं। अपनी रसोई करना, पाखाना साफ करना, सफाई आदि सब खुद की करते हैं। एक प्रेस है, उस प्रेस में काम करते हैं। वहां आध्यात्मिक पुस्तकें और 'मैत्री' नाम की मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है। तो यहां तीन काम चलते हैं - एक सामूहिक साधना, दो श्रमनिष्ठा और तीन सबके साथ एकरूप होकर ध्यान, स्वाध्याय इत्यादि तथा भक्ति। ये बातें यहां मुख्य हैं।)*

योगसूत्र में एक सूत्र है, ***ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा***। ऐसी ऋंतभरा प्रज्ञा पैदा करने के लिए खास करके स्त्री-शक्ति सामने आये, तो बहुत लाभ होगा। व्यक्तिगत साधना करने वाली बहुत स्त्रियां हो गयीं। परंतु अब स्त्रियों की सामूहिक साधना होनी चाहिए। ब्रह्मचारिणी स्त्रियां निकलनी चाहिए, बहनों में सामूहिक शक्ति आनी चाहिए। ब्रह्मविद्या के साथ कर्मयोग का आचरण भी होना चाहिए। उसका नमूना दिखाना चाहिए। इसीलिए यह ब्रह्मविद्या मंदिर है। जहां तक भारत के इतिहास का हमें ज्ञान है, उसके अनुसार स्त्री-शक्ति जगाने का काम प्रथम भगवान कृष्ण ने किया, व्यापक पैमाने पर। उसके बाद के युग में महावीर स्वामी ने प्रयत्न किया। बहुत बड़े पैमाने पर उन्होंने स्त्रियों को दीक्षा दी।

इन दो प्रयत्नों के बाद तीसरा प्रयत्न व्यापक पैमाने पर महात्मा गांधी ने किया। इस काम के लिए विनोबा का भी अल्प-सा अनुदान है। यह कौन-सा अनुदान है ? स्त्रियों की सामूहिक साधना के लिए ब्रह्मविद्या-मंदिर की स्थापना। स्त्रियों की व्यक्तिगत साधना प्राचीन काल से चली आ रही है। मैं बहुत दफा नाम लेता हूं, पांच स्त्रियों का - लल्ला, मीरा, मुक्ता, अक्का, अंडाल। लल्ला कश्मीर में, मीरा राजस्थान में, मुक्ता महाराष्ट्र में, अक्का कर्नाटक में और अंडाल तमिलनाड में। उनको समाज का विरोध करना पड़ा। समाज ने भी उनको काफी तकलीफ दी। लेकिन यह सारी उनकी व्यक्तिगत तपस्या थी।

किसी विषय में व्यक्तिगत तपस्या होती है, तो आरंभ हो जाता है। यह साइंस की पद्धति है। साइंस के जितने प्रयोग होते हैं, वे प्रयोगशाला में होते हैं। व्यक्तिगत क्षेत्र में सफलता हासिल हुई तो उसका व्यापक आयोजन किया जात है। प्राचीन काल में स्त्रियों ने व्यक्तिगत तौर पर शक्ति-निर्माण की कोशिश की, जिसके फलस्वरूप आज हमको प्रेरणा मिल रही है कि सामूहिक तौर पर स्त्रियां खड़ी हो जाएं। इसके आगे जो युग आने वाला है, वह मुख्यतया स्त्रियों का है। स्त्रियों की आध्यात्मिक शक्ति पैदा होनी चाहिए, ऐसी अपेक्षा सारा समाज रखता है। *(ब्रह्मविद्या-मंदिर, एक अभिनव दर्शन, विनोबा)*